RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Vol.: 1, Issue: 2, July-December 2023, pp.1-7

नार्गाजुन : कहानीकार के रूप में

डॉ. वर्षा अग्रवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहबाद विश्वविद्यालय

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

ई-मेल :va2421976@gmail.com

सारांश

हिन्दी साहित्य में नागार्जुन आंचलिक कलाकार के रूप में परिचित हैं। नागार्जुन के कथा साहित्य में बिहार प्रान्त का ग्रामीण जीवन अपने मूलस्वरूप में सामने आया है। नागार्जुन वास्तव में जैसे थे, वही रूप उनके कथा साहित्य में विभिन्न चरित्रों के माध्यम से उभर कर आया है। यों भी उन्होंने बहुत कहानियाँ नहीं लिखीं। उनकी पहली कहानी—'असमर्थदाता', मासिक दीपक (अबोहर) सन् 1936 में 'अकिंचन' नाम से पहली बार प्रकाशित हुई, जो बाद में 1940 ई. में 'विशाल भारत' में भी वैद्यनाथ मिश्र के नाम से छपी थी। 'आसमान में चंदा तेरे' शीर्षक से संकलन तैयार किया, जिसमें कुल बारह कहानियाँ हैं। अब इनकी संख्या नवीन प्रकाशित रचनावली के अनुसार तेरह हो गयी हैं। इन कहानियों में नागार्जुन संघर्ष और सौन्दर्य को एक साथ चित्रित और ध्वनित करने में उच्चकोटि की कला का परिचय देते हैं।

मुख्य शब्द : नागार्जुन, कथा साहित्य, कहानीकार

प्रस्तावना

नागार्जुन, त्रिलोचन और केदार नाथ अग्रवाल अपनी रचनात्मक उपलब्धियों के कारण प्रगतिशील कविता के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में विख्यात हैं। भारतीय जनता के प्रति आत्मिक अनुराग एवं राष्ट्र की प्रकृति से लगाव ने इनके संवेदन संसार को समृद्ध बनाया है। नागार्जुन के रचनाबोध में ऐसी कई खूबियाँ हैं, जो प्रगतिशील काव्यधारा में उन्हें पहचान प्रदान कराती हैं।

हिन्दी के आम प्रतिभाशाली कवियों की भाँति नागार्जुन का जन्म एक दरिद्र ब्रह्मण परिवार में हुआ। अपने माँ-बाप की छह संतानों में अकेले जिन्दा रहने वाले नागार्जुन का जन्म कब हुआ, यह उन्हें भी ठीक से पता नहीं था। 1911 ई. में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमाको, यानी जून महीने में उनका जन्म हुआ ऐसा अनुमान लगाया गया है। स्वयं नागार्जुन ने भी 1911 ई. में अपना जन्म स्वीकार किया है। तरौनी गाँव जो

नागार्जुन का पितृग्राम है, कुछ विद्वानों ने उसे नागार्जुन के जन्म स्थान में रूप में चिह्नित किया है, वास्तविकता तो यह है कि उनका जन्म उनके ननिहाल के ग्राम सतलखा, पोस्ट, मधुबनी जिला दरभंगा में हुआ। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था।

लगातार चार संतानों के काल कवलित हो जाने के कारण गोकुल मिश्र ने देवधर जिला संथाल परगना पहुँचकर वैद्यनाथ धाम में भगवान शिव का पूजन अर्चन करते हुए दीर्घजीवी पुत्र की कामना की। 'महीने भर के अनुष्ठान के पश्चात् कालांतर में जो संतान पैदा हुई, उसे उसकी बुआ ने 'ठक्कन नाम दे दिया कि चंद दिनों के बाद यह बालक माँ-बाप को ठगकर चला जाएगा, इसी ठक्कन का नामकरण बाबा वैद्यनाथकी कृपा होने के कारण वैद्यनाथ मिश्र हुआ।' 1

नागार्जुन की माँ उन्हें पाँच, छह वर्ष की अवस्था में ही छोड़कर चली गई थीं। उन्हें अपनी माँ पूरी तरह याद नहीं—पाँच-छः वर्ष की उम्र वाले बालक को याद भी कितना रहता? माँ की याद आभास मात्र ही है— ''वह गौर श्याम थी। उसे दमा का रोग था। ज्यादातर वह लेटी ही रहती थी। बस यही याद है। चेहरा वैसा था? कपार छोटा, आँखें न छोटी न बड़ी। नाक नुकीली नहीं थी।'' बचपन में माँ के स्नेह से वंचित ठक्कन को विरासत में परिवार की दरिद्रता एवं पिता का दुर्व्यहार मिला। नागार्जुन ने अपनी कविता रवि ठाकुर' में इसे स्वीकार किया है—

पैदा हुआ था मैं
दीन-हीन अपठित किसी कृषक-कुल में—
आ रहा हूँ पीता अभाव का ठेठ बचपन से
कवि! मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
जीवन गुजरता प्रतिफल संघर्ष में!''

नागार्जुन जितना अधिक पढ़ते-बढ़ते गये, उतना अधिक मूड बना कि घूमना चाहिए, देखना चाहिए। जब यह मूड बना तब 'यात्री' उपनाम रखा। प्रेरणा बनी रविन्द्र की इन पंक्तियों से—

''पतन अभ्युदय बन्धुर पन्था, जुग-जुग धावति आती।
तुम चिर सारथी, तब रथ चक्रे, मुखरित दिन रात्री।।''

नागार्जुन अपने लेखन के सम्बन्ध में स्वयं बताते हैं कि संस्कृत की पाठशाला से ही ''मैं संस्कृत में श्लोक लिखने लगा। मेरे घर वाले कभी-कभी ताश इत्यादि खेला करते थे, पर मेरा मन तो शब्दों के खेल में ही लगा था।''

नागार्जुन की रहन-सहन की विशेषता और जनपक्षधरता की प्रवृत्ति के कारण ही उन्हें 'बाबा' की उपाधि प्रदान की गई। बाबा को यह पूर्ण विश्वास था वे वर्षों तक जीवित रहेंगे। बाबा स्वयं कहते हैं—

''मैं न अभी मरने वाला हूँ,
मर-मरकर जीने वाला हूँ।''
(संग तुम्हारे साथ तुम्हारे)

नि:सन्देह बाबा का यह विश्वास उनकी रचनाओं के माध्यम से हमारे मध्य उपस्थित रहेगा। नागार्जुन का निधन (5 नवम्बर, 1998) एक वटवृक्ष का उखड़ना मात्र नही है, यह पस्त समय में हिन्दी साहित्य में नये

रास्ते तलाशते रचनाकारों के लिए एक मुश्किल भरा समय भी है।

सादगी, सरलता और खुलापन बाबा के व्यक्तित्व की मूलभूत विशेषताएँ हैं। जीवन के कठोर संघर्षों में तपकर उनका व्यक्तित्व कुंदनकी भाँति निखरा था। दुख और किसी को माँजता हो या न माँजता हो, नागार्जुन के व्यक्तित्व को उसने पूरी तरह माँजकर चमकाया है। परिवार के भार को कभी नहीं उठाया बल्कि हमेशा एक आत्मसम्मान और स्वाभिमानी रचनाकर्ता ही बने रहे। उनका परिवार उनके अपने औरस पुत्र-पुत्रियों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन मानस पुत्रों तक विस्तृत था, जिन्हें उन्होंने अपनी कृतियों में जन्म दिया था। हजारों पुत्र-पुत्रियाँ तथा परिवारों के मुखिया वाबा जीवन पर्यन्त सबसे जुड़े रहे तथा सभी पर अपना नेह बरसाते रहे। अपने विशाल उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए बाबा ने अपने जीवन में बहुत कुछ पाया तथा खोया। अंत में श्री धर पाठक की इन पंक्तियों को कहना चाहूँगी—

''प्राण पियारे की गुन गाथा।
साधु कहाँ तक मैं गाऊँ
गाते-गाते चूके नहीं वह
चाहे में ही चुक जाऊँ।''

यायावर और फक्कड़ व्यक्तित्व से नागार्जुन ने ढेर सारा अनुभव समेटा है। समसामायिक परिस्थितियों ने इस अलमस्त रचनाकार को बहुत कुछ प्रभावित किया है। ''इस बात में अधिक विवाद की गुंजाइश नहीं है कि जिस विशिष्ट राजनीतिक आर्थिक, धार्मिकतथा साहित्यिक परिवेश में साहित्यकार की चेतना का प्रस्फुटन और विकास होता है, उससे प्रभावित हुए बिना वह नहीं रह सकता।''

नागार्जुन बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। उन्होंने उपन्यास, काव्य, कहानी, निबंध, आलोचना, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, बाल साहित्य, अनुवाद आदि साहित्यिक विधाओं को अपनी लेखनी का विषय वनाया। हिन्दी, मैथिली और संस्कृत तीनों ही भाषाओं में उन्होंने साहित्य रचना की है।

नागार्जुन एक कहानीकार

नागार्जुन की कहानियों पर हिन्दी पाठकों को रुचि तो हुई हैं, लेकिन आलोचकों और समीक्षकों ने उनका नोटिस नहीं लिया है। नागार्जुन की कहानियाँ यथार्थवादी-व्यंग्य उभारती हैं, साथ ही सामाजिक भी है। 'असमर्थदाता', 'तापहारिणी', जेठा, काया-पलट, विशाखामृगारमाता, ममता, विषमज्वर, हीरक जयंती, हर्ष चरित का पॉकिट एडीशन, मनोरंजन टैक्स आसमान में चंदा तेरे' भूख मर गयी थी, सूखे बादलों की परछाइयाँ नामक कहानियों में अतीत का बखान एवं ऐतिहासिक रोमांस नहीं होता, अपितु सामाजिक जीवन के धुँधले और उलझे हुए संदर्भ स्पष्ट होकर सुलझ जाते हैं।

प्रगतिशील चेतना सम्पन्न कथाकार नागार्जुन कविता, उपन्यास की भाँति कहानियों में समाज का व्यापक चित्रण नहीं कर सके हैं और न ही व्यापक स्तर पर सामाजिक विषमताओं-अन्तर्विरोधोंको ही अपनी कहानियों में अभिव्यक्त कर सके हैं। विषय-वस्तु की दृष्टि से इनकी कहानियाँ कमजोर और साधारण हैं। समाज में हो रहे व्यापक बदलाव को और उनमें अन्तर्निहितअन्तर्विरोधों को व्यापकता और गहराई से वे दिखा नहीं पाए हैं। कुछ कहानियाँ सामाजिक समस्याओं को स्पर्श मात्र करके रह जाती हैं। इस दृष्टि से

नागार्जुन की प्रथम कहानी को लिया जा सकता है।

'असमर्थदाता' की केन्द्रीय समस्या—भिक्षावृत्ति की समस्या हैं परंतु नागार्जुन का ध्यान न तो इस समस्या के मूल कारणों की तरफ गया और न ही उसके विभिन्न पक्षों की तरफ। कथा वाचक (स्वयं लेखक ही होगा) को एक नौ दस साल की मैली-कुचैली कपड़े पहनी लड़की आवाज लगाती है—बाबू जी। वह कहती है—''बाबू जी एक पैसा! मेरी माँ अन्धी...। उसकी इस याचना पर कथाकार पहले तो पिण्ड छुड़ाने के लिए बहाना ढूँढ़ता है मगर ''यह साहस नहीं हुआ कि आगे बढ़ जाऊँ।'' वर्तमान समय में भिक्षावृत्ति की समस्या मुख्य रूप से आर्थिक समस्या है। इस कहानी में भिक्षावृत्ति इन जैसे लोगों की नियति बन गई है। तभी तो उस लड़की की भिखारिन—माँ के मुँख से ये शब्द निकलते हैं कि ''अभी तक तो इसने भीख भी माँगना नहीं सीखा है।''

स्पष्ट है कि लड़की की माँ भिखारिन है और बीमारी के कारण अपनी बेटी को भीख माँगने के लिए भेज दिया है। जिन लोगों की भीख माँगना प्रवृत्ति बन गई है उनको एकाध पैसा या रुपया देकर इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता कहानी भावुकता की ही नहीं बौद्धिकता की भी माँग करती है, सँवेदनशील होने की माँग करती है, तभी प्रभावशाली और मार्मिक बनती है,

'असमर्थदाता' कहानी के पश्चात अगर 'भूख मर गई थी' कहानी को पढ़ा जाए तो भिक्षावृत्ति की अनिवार्यता और प्रवृत्ति के अंतर को समझा जा सकता है। ये दोनों एक दूसरे की पूरक कहानियाँ हैं। पहली कहानी में भीख माँगना प्रवृत्ति है तो दूसरी कहानी में तात्कालीन अनिवार्यता। बूढ़ा व्यक्ति बताता है भूख शांत करने के लिए मैंने ही उसे कुकर्म के लिए प्रेरित किया। ''मैं गूँगा और अपंग बनकर जमाने का करिश्मा देखता रहा और वह बेचारी अपनी इज्जत का सौदा करती रही चार-चार मुँहों के हवनवुँâड में जैसे-तैसे अनाज की समिधा ड़ालती रही। यहाँ नागार्जुन ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है और भावुकता को दूर रखा है।

नागार्जुन ने 'विषमज्वर' कहानी में कर्मचारी वर्ग की आर्थिकविषम स्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है और उसमें वह पूर्णतया सफल रहे हैं। एक तरफ शोषण और दूसरी तरफ उदारता यही तो है पूँजीपति वर्ग का वास्तविक चरित्र। अतिरिक्त पैसा व्यक्ति को व्यक्तिवादी बनाता है, जिससे वह समष्टि की जगह व्यष्टि की सोचता है—यही पूँजीवाद की विशेषता है। दीनानाथ पत्नी के सामने निर्णय लेता है कि अब दफ्तर में कभी ओवर टाइम नहीं करूँगा, क्योंकि काम करते-करते मर क्यों न जाएँ सेठ को हमारी रत्तीभर परवाह नहीं है। यह कथन उसकी वर्ग चेतना की उद्घाटित कर देता है। कर्मचारी वर्ग अब पूँजीपति वर्ग के चरित्र को और उसके शोषण की प्रवृत्ति को भली-भाँति जान गया है और सचेत हो गया है। इस प्रकार आर्थिक विषमता के ग्रस्त एक निम्न कर्मचारी के आन्तरिक द्वन्द्व को यथार्थ दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है।

नागार्जुन ने मातृहीन बच्चों को अपनी कहानियों की विषय-वस्तु बनाया है। वे स्वयं मातृहीन रहे हैं। अपने जीवनानुभवों के आधार पर कुछ प्रसंगों को लेकर नागार्जुन ने 'जेठा' और 'ममता' जैसे मातृहीन बच्चों पर कहानियाँ लिखी हैं। 'जेठा' कहानी का जेठानन्द अपनी मौसी-मौसा के पास रहता है। चार साल का था तो बाप मर गया था। उसकी माँ ने उसका जीवन बरवाद कर दिया है। वह अपनी माँ को ही अपने विनाश का कारण मानते हुए उसे राक्षसी और चुड़ैल जैसे शब्दों की संज्ञाएँ देता है। समाज उसकी मन:स्थिति को नहीं

समझता है कि आखिर वह इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहा है नागार्जुन ऐसे मातृहीन बच्चों के मनोविज्ञान को भली-भाँति जानते हैं।

इसी तरह 'ममता' कहानी में भी मातृहीन लड़के का अपनी चाची के प्रति स्नेह और वात्सल्य को दिखाया गया है। बुलो और चाची के मध्य कुछ गलतफहमी हो गयी है। वह अपने मित्र के घर बिना बताए चला गया है। वह अपने मित्र से कहता है कि ''मैं अब जरा देर करूँगा तो चाची अकुलाकर अंधी हो जाएगी। छोड़, इस वक्त, मुझे जाने दो।'' बुलो घर जाता है और खाना खाने लगता है। खाने की इन चीजों में आज उसे अनूठा स्वाद मिल रहा था। इस प्रकार इन दोनों कहानियों में मातृहीन बच्चों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है, किन्तु ये प्रभावशाली और मार्मिक नहीं बन सकी हैं। साधारण-सी कहानियाँ ही बनकर रह गई हैं। ये किसी गम्भीर मानवीय और सामाजिक समस्या के विभिन्न पहलुओं को उद्घाटित नहीं कर पातीं।

'ताप-हरिणी' कहानी का नायक अपनी पत्नी अपराजिता को नागरिक वातावरण से शीघ्र ही परिचित कराना चाहता है। मिथ्या संकोच की कृत्रिम भावना जो औसत हिन्दू परिवारों में घर किए हुए है, इसके विरुद्ध अपराजिता को तैयार करना चाहता है। इसके लिए वह अपनी पत्नी के साथ मर्दाना घाट पर स्नान करता है। बस यही कहानी का मूल कथ्य है।

इसी प्रकार 'मनोरंजन टैक्स' भी नागार्जुन का एक संस्मरण मात्र ही है। जिसमें कथानायक रतन की रेलवे स्टेशन पर एक बुक स्टाल पर नौकरी कर रहे लड़के से मित्रता हो जाती है और वह उससे महीने में एक बार आकर कुछ मैगजीन पढ़ने को ले जाता रहता है। बस यही उनकी मित्रता का आधार है, इन दोनों कहानियों में हमें कहानी के कम संस्मरण के तत्व अधिक दिखाई देते हैं।

नागार्जुन की 'कायापलट' कहानी में गाँवों के पुनरुद्धार के बारे में बताया गया है। आजादी पूर्व गाँवों के शिक्षित युवक शहरों की ओर भागते रहे हैं और फिर गाँवों की तरफ मुँह भी नहीं करते। जब तक गाँवों के शिक्षित नव युवक गाँवों में नहीं रहेंगे तब तक बाहर के शिक्षित युवक क्यों गाँवों में अपना अमूल्य जीवन लगाएँगे। 'कायापलट' में इसी समस्या को उठाया गया है। यह कहानी पूर्णत: आदर्शवादी है। इंजीनियर बाबू भुवनेश्वर झा वर्षों बाद अपने गाँव छिनौती आ रहे हैं। अगस्त आंदोलन में दस दिन के लिए गाँव आए थे, पंद्रह दिन के लिए बाप के श्राद्ध में और अब माँ के श्राद्ध में आए हैं। गाँव के वयोवृद्ध राजपूत बाबू पलटू सिंह को उनसे क्या समस्त गाँव के पढ़े-लिखे लोगों से एक शिकायत है कि वे पढ़-लिखकर गाँव छोड़ देते हैं। वे कहते हैं—''जरा सोचो बाबू, पढ़-पढ़कर सभी अगर इसी तरह गाँव छोड़ते चले जाएँ तो गाँव मसान बन जाएगा, मसाना।'' बाबू भुवनेश्वर झा बाद में अपना निर्णय बदलते हैं और स्वयं गाँव में रहने तथा अपने दोनों लड़कों को भी गाँव की कायापलट करने में सहायता करेंगे ऐसा निर्णय लेते हैं। कहानी में यथार्थ से दूर एक काल्पनिक संसार का निर्माण किया है। वास्तविकता का अभाव है।

व्यक्ति के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब वह अपने मनोभावों को लयबद्ध करना चाहता है। कविता उसकी इस भावना को पूर्ण करती है। 'आसमान में चन्दा तेरे' कहानी का नायक पद्मानन्द पढ़ाई के दौरान कवि लीलाधर के सम्पर्कमें आकर कविताएँ लिखने ही नहीं लगा था, बल्कि कवि सम्मेलनों में पढ़कर आर्थिकलाभ भी प्राप्त कर चुका था। पद्मानन्द आगे कुछ परिस्थितियों के कारण कविता न करने का निर्णय लेता है और अपनी पढ़ाई चालू रखता है। स्पष्ट है कि आजकल युवक भावनाओं के ज्वर में बहकर

अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ कर डालते हैं। वे बौद्धिक होकर नहीं सोचते हैं। भावना और बौद्धिकता में सामंजस्य होना आवश्यक है।

नागार्जुन ने ऐतिहासिक कहानियाँ भी लिखी हैं जिनकी संख्या दो है—'विशाखामृगारमाता' और 'हर्षचरित' की 'पॉकेट एडीशन'। विशाखा मृगारमाता साधारण कहानी है जो बुद्धकालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का हल्का सा परिचय देती है। लेकिन इसके विपरीत दूसरी ऐतिहासिक कहानी 'हर्षचरित की पॉकेट एडीसन' में नागार्जुन एक विश्वव्यापी संदेश देने में सफल हो गये हैं। वास्तव में 'विशाखामृगारमाता' में नागार्जुन शांति का ही संदेश दे पाए हैं किंतु 'हर्ष चरित की पॉकेट एडीशन' में नागार्जुन शान्ति के साथ-साथ अगर आवश्यक हो तो युद्ध को भी अनिवार्य मानते हैं तथापि उनका प्रमुख उद्देश्य विश्व में शांति स्थापना करना ही है। नागार्जुन ऐतिहासिक को समकालीन संदर्भों से जोड़ देते हैं, यही इस कहानी की उपलब्धि और सार्थकता हैं।

निष्कर्ष

अत: कहा जा सकता है कि नागार्जुन की कहानियाँ संवेदना और विषयवस्तु की दृष्टि से साधारण ही है। समकालीन जीवन-संदर्भ और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं को उठाती तो हैं पर उनका समाधान पूर्णतया प्रस्तुत नहीं करती है।

नागार्जुन की हर रचना एक तारीख का बयान है। हालातों का बयान करते हुए वे अपने युग की संचेतना के वाहक बन जाते हैं। उनका साहित्य जीवन से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है। ''साहित्य का जीवन से दुहरा सम्बन्ध होता है। एक क्रिया रूप में, दूसरा प्रतिक्रिया रूप में। क्रिया में वह जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में उसका निर्माता और पोषक है।' यही प्रतिक्रिया कभी पुचकारती है, कभी व्यंग्य करके कोंचती है, कभी आक्रोश से उबलते हुए अक्षर गढ़ती है तो कभी क्रांति की मुट्ठियाँ भींचती है। बाबा नागार्जुन अपने फक्कड़ाना अंदाज में साहित्यिक संयम-नियम, आचार-विचार के हिमायती नहीं रहे। उनके जीवन में ही सर्वत्र अभाव की टकराहट है। जनता के जीवन से हटकर नागार्जुन की कलम कभी नहीं चली। नागार्जुन आदर्श साहित्य रचने में नहीं, वह समाज रचने में लगे रहे। जिसके आदर्श हमें आज भी प्राप्त होते हैं।

सन्दर्भ

कुमार, अजय (1986). उदभावना, नागार्जुन से मनोहर श्याम जोशी की एक भेंट, पृष्ठ संख्या 51-52

शोभाकान्त (1993). नागार्जुन मेरे बाबूजी, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 58

नागार्जुन (1953). युगधारा, यात्री प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 13

कुमार, अजय. (1986). उदभावना, नागार्जुन से मनोहर श्याम जोशी की एक भेंट, पृष्ठ संख्या 51-52

नागार्जुन (1999). आखिर ऐसा क्यों कह दिया मैंने, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 26

अग्रवाल, महावीर (1995). जनवरी-मार्च, सापेक्ष-38, नागार्जुन विशेषांक, पृष्ठ संख्या 317

शोभाकान्त (1953). युगधारा, यात्री प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 14

नागार्जुन (1982). आसमान में चन्दा तेरे, प्रस्तावना प्रकाशन

शोभाकान्त (2014). नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 238

शोभाकान्त (2014). नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 238

शोभाकान्त (2014). नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 240

शोभाकान्त (2014). नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 271

शोभाकान्त (2014). नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 257

नागार्जुन (1982). आसमान में चन्दा तेरे, प्रस्तावना प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 23

डॉ. नगेन्द्र (1949). विचार और विवेचन, गौतम बुक डिपो, पृष्ठ संख्या 25